भूरा

फ्रॉम कानपुर से

गीतांजली सिंह

Sample Copy. Not For Distribution

भूरा फ्रॉम कानपुर से

Sample Copy. Not For Distribution.

PublishingAinAsupportAof,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector A 6, Dwarka, New Delhi A 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh A 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, 2017, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-5457-1249-8

Price: ₹ 185.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

भूरा
फ्रॉम कानपुर से

गीतांजली सिंह

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

प्रोत्साहन

भूरा, कानपुर की सड़कों का एक आवारा कुत्ता जिसे गीतांजली ने अपनी किताब का हीरो बनाया है। खुद्दार भूरा को जंजीर में बंधकर सेठानी का दूध रोटी नहीं खाना है, बल्कि उसे अपनी आजादी की रुखी सूखी रोटी पसंद है। फिर भी उस रोटी के लिए उसे हम इंसानों पर ही निर्भर होना पड़ता है। भूरा एक ऐसा खुशनसीब कुत्ता है जो देश के कई बड़े नगरो और महानगरो की यात्रा करता है। हर जगह कोई ना कोई दयावान इंसान उसका दोस्त बन जाता है, जो उसके सफर में उसका साथ देता है। और भूरा भी पूरी वफादारी निभाता है, जिसे पढ़कर दिल खुश हो जाता है। गीतांजली ने भूरा के जीवन और उसकी परिस्थितियों को बहुत सहज और मनोरंजक भाषा में लिखा है। इस किताब को पढ़ते हुए जहाँ भूरा के दर्द से मन दुखी हो जाता है वहीँ किसी दयावान इंसान द्वारा की गयी उसकी मदद से मन खुशी से भर जाता है। पशु प्रेमियों के लिए ये एक बेहतरीन किताब है ही, लेकिन जिन्हें पशुओं से खास लगाव नहीं है, वो भी इसे पढेंगे तो उन्हें अपने मोहल्ले के कुत्तों में भूरा की तलाश जरूर रहेगी।

गीतांजली ने इस किताब को लिखकर सड़क के कुत्तों को बचाने, उनके दुःख और खुशी को आम लोगो तक पहुंचाने का एक सुन्दर प्रयास किया है। जो लोग

Sample Copy. Not For Distribution.

कुत्तों के भौंकने से परेशान होते हैं, मुझे विश्वास है भूरा की कहानी पढने के बाद उन्हें भूरा और उसके साथियों की भौंकने की आवाज में छुपी उनकी भूख, प्यास, बीमारी के दर्द को महसूस कर पायेंगे।

गीतांजली को आभार और बधाई देती हूँ इतनी प्यारी भूरा की कहानी लिखने के लिए जिसमें सड़क के आवारा कुत्तों का अद्दभूत वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।

फिजा शाह

एनिमल एक्टीविस्ट मुंबई

ईश्वर ने जब इस संसार की रचना की, पशु–पंछी, पेड़–पौधे, धरती–आकाश, और इस पूरी प्रकृति की, तब उसके मन में इनकी खुशहाली का ख्याल रहा होगा तभी तो उसकी बनायी हुयी हर चीज खूबसूरत और पवित्र है। परन्तु जब उसने मनुष्य बनाया तो उसमें कोई कमी छोड़ दिया जिससे इंसान जहाँ जाता है, जिस वस्तु को हाथ लगाता है, उसे नष्ट कर देता है। अनेको वर्षों से मनुष्य जाति के अत्याचारों से पीड़ित प्रकृति अब नैसर्गिक आपदाओं के रूप में जवाब भी देने लगी है। प्रकृति के कराहने की आवाज जिन कुछ लोगों को सुनाई दे रही है वो हमें बार बार चेतावनी भी दे रहे हैं।

भूरा फ्रॉम कानपुर से, हमें नींद से जगाने का प्रयास है। गीतांजली सिंह एक लेखिका और फिल्मकार हैं जिनके ह्रदय में सभी जीवों के लिए भरपूर करुणा और प्रेम है। गीतांजली जी ने अपने आस पास जानवरों पर हो

Sample Copy. Not For Distribution.

रहे अत्याचार से विचलित होकर अपनी बात को अपनी लेखनी के जरिये हम सबके सामने रखा है। कहानी का नायक भूरा इस कहानी का सूत्रधार है, जो जिस सरलता और मनोरंजक तरीके से कहानी को चित्रित करता है वो गीतांजली सिंह को एक कुशल लेखिका और फिल्मकार तो साबित करता ही है साथ ही प्राणियों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को भी दर्शाता है।

मैं गीतांजली सिंह को बहुत सारी शुभकामनाएं देते हुए आशा करती हूँ इनका ये प्रयास हमारी उस प्रकृति को सहेजने में सहायक हो, जो हम सबको विरासत में मिली है।

डॉक्टर अमी भाटिया

मुंबई

इस किताब के नायक भूरा का सफर महज एक किस्सा या कहानी नहीं बल्कि सड़क के एक आवारा कुत्ते का पूरा जीवन दर्शन है। जिसमें भूरा हर स्थिति में अपने आपको ढालता चलता है। और एक जानवर होते हुए भी किसी न किसी इंसान का मानसिक संबल बनता है। साथ ही भूरा इस किताब के अन्य किरदारों के दुःख दर्द को जिस तरह महसूस करता है वो उसके भावनाओं से भरी सच्चाई है। साथ ही जानवरों के प्रति मनुष्यों के रवैये पर यहाँ वहां उसके द्वारा किये गए कटाक्ष जहाँ दिल को गुदगुदाते हैं वहीं हमें सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि हम इंसान जानवरों के दर्द को अनदेखा कैसे कर देते हैं?

Sample Copy. Not For Distribution.

भूरा की कहानी पढने के बाद मुझे विश्वास है आप उससे और उसके जैसे सभी सड़क के कुत्तों से प्यार करने लगेंगे।

अपर्णा घोषाल

अभिनेत्री एवं पेट ओनर

मुंबई

My experience with the author is her devotion and love for the strays is an example set up for all others to follow. She has mentioned in this book about the incident, which has actually taken place in our complex and narrated it in a hilarious way, you will burst out with laughter. Her hard work towards her tasks in hand is remarkably wonderful.

I am congratulating her for the book, which shows her thoughtfulness and sensitivity about the strays & their lives.

Manisha Mehra

Dog lover & feeder.

Mumbai

Sample Copy. Not For Distribution.

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

भूरा फ्रॉम कानपुर से

पतंगबाजी के बहाने सुबह से ही धरना देकर बैठ जाते हैं छत पर. और जब अपने मोहल्ले की रंजना छत पर नहीं दिखी तो आप पास वाले मोहल्ले की सोना या शबनम को ताड़ने पहुँच गए और लगे उनकी गली में अपनी सायकिल की घंटी टुनटुनाने, और हमारी गर्मी की भरी दुपहरी की अच्छी खासी नींद की ऐसी तैसी करने के बाद भी बदकिस्मती से सोना शबनम नहीं दिखीं, तो कमला पसंद के बहाने तीसरे मोहल्ले लपक लिए रजिया आपा की गोटे किनारी की दुकान जो बिलकुल रज्जाक पनेड़ी की गुमटी के सामने है. आइये अब चलते हैं नौटंकी वाली गली, जहां गुलबदन रानी दालान में बैठी लम्बे घुंघराले बाल खोले, गोरे गोरे हाथों से नल्ली निहारी के साथ कबाब के टुकड़े भी फेंक फेंक के खिलाती हुयी गुनगुनाती है, "चमन से कौन चला है खामोशियाँ लेकर, कली कली तड़प उठी है सिसकियाँ लेकर" तो महराज उसकी दर्द भरी आवाज हमारे दिल पर ऐसे लगती है कि नल्ली निहारी जैसा लजीज निवाला भी हमारे हलक से बाहर निकल निकल आता है.

लोग कहते हैं जब गुलबदन गाती है तो लोगों के दिल चटाक चटाक करके शीशे की तरह टूटते हैं. और जो पहले से ही टूटे दिल हैं उनके जख्मों पर यही आवाज मलहम का काम कर जाती है. कहा तो ये भी जाता है कि गुलबदन गले से नहीं अपनी छाती को फाड़ कर गाती है.

लेखक से संपर्क के लिए :
dirgeetsingh@gmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING
www.educreation.in

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-1-5457-1249-8
9 781545 712498 >

Sample Copy. Not For Distribution.